विपश्यना

साधकों का
मासिक प्रेरणा पत्र

वार्षिक शुल्क रु. 30/-
आजीवन शुल्क रु. 500/-

बुद्धवर्ष 2557, आश्विन पूर्णिमा, 18 अक्तूबर, 2013 वर्ष 43 अंक 4

For Patrika in various languages, visit: http://www.vridhamma.org/Newsletter_Home.aspx

धम्मवाणी

"सब्बे सङ्खारा अनिच्चा"ति, यदा पञ्ञाय पस्सति।
अथ निब्बिन्दति दुक्खे, एस मग्गो विसुद्धिया॥
धम्मपद- २७७, मग्गवग्गो.

"सारे संस्कार अनित्य हैं" (याने, जो कुछ उत्पन्न होता है वह नष्ट होता ही है)। इस (सच्चाई) को जब कोई (विपश्यना-) प्रज्ञा से देख (-जान) लेता है, तब उसको दु:खों से निर्वेद प्राप्त होता है (अर्थात, दु:ख-क्षेत्र के प्रति भोक्ताभाव टूट जाता है) - ऐसा है यह विशुद्धि (विमुक्ति) का मार्ग!

नमन करें गुरुदेव को! चरणन शीश नवाय।

पद्मभूषण विश्व विपश्यनाचार्य श्री सत्यनारायणजी गोयन्का की अंतिम यात्रा

परम पूज्य गुरुदेव श्री गोयन्काजी का महाप्रयाण ९० वर्ष की अवस्था में रविवार, दि. २९ सितंबर २०१३ की रात्रि १०.४० बजे घर पर (मुंबई में) शांतिपूर्वक हुआ। अंत समय तक वे पूर्णतया सक्रिय, सजग, सचेत एवं शांत रहे। जीवन के अंतिम दिन भी उनकी दिनचर्या बिना किसी कठिनाई के पूर्ववत रही।

इस महीने में भी अनेक लोग पूज्य गुरुदेव से मिलने आये और उनसे धर्मचर्चा की। कई प्रमुख साधकों के अतिरिक्त बरमा के धार्मिक एवं सांस्कृतिक मंत्रालय के उपमंत्री श्री ऊ सो विन (U Soe Win) तथा उनके साथ चार बरमी भिक्षु आये। पूज्य गुरुदेव के सान्निध्य में 'ग्लोबल विपस्सना फाउंडेशन ट्रस्ट' की मीटिंग हुई। महाराष्ट्र के होमगार्ड डी.जी. श्री सुरिंदर कुमार सिंह (आई.पी.एस.) आकर मिले और अमेरिका के डॉ. सुखदेव सोनी भी।

उन्होंने अपने लेखन संबंधी कई महत्त्वपूर्ण कार्य भी निपटाये। अपनी डायरियों आदि में लिखित हिंदी और राजस्थानी के ५००-५०० से अधिक अप्रकाशित दोहों की छँटनी करवा कर उनमें संशोधन करवाया और इनको दोहों की पुस्तकों के आगामी संस्करण में जोड़ने का निर्देश दिया।

२६ सितंबर को संघदान के समय भिक्षुओं के साथ।

पू. गुरुदेव के निवास स्थान पर २९ सितंबर की प्रातः तक, पिछले दस दिनों से पुत्रवधू नयना की ओर से नित्य संघदान का आयोजन चल रहा था, जिसमें माताजी अपने हाथों से संघदान करती थीं। इस बीच कई बार पू. गुरुदेव भी भिक्षुओं से मिले और साधक भिक्षुओं को मंगल मैत्री प्रदान की।

२९ सितंबर को सुबह नाश्ते के समय पू. गुरुदेव ने श्रीप्रकाश से पगोडा के काम-काज के बारे में पूछा तब उन्होंने कहा कि आज रविवार है, मैं वहां जा रहा हूं, सारी बातें आकर बताऊंगा।

दोपहर का भोजन करते हुए पू. गुरुदेव ने अपने पास बैठी पू. माता जी, पुत्र श्यामबिहारी एवं श्रीप्रकाश को संबोधन करके कहा -- 'आज मैंने डॉक्टरों को छुट्टी दे दी'। उस समय उनका यह कथन किसी को गंभीर नहीं लगा। परंतु आज सुबह से ही ऐसा लगा जैसे उन्होने निश्चय कर लिया हो कि आज शरीर छोड़ना है। इसीलिए अधिकतर अंतर्मुखी रहे। रात को जब उनका शरीर सदा के लिए उपचार-मुक्त हो गया, तभी पू. गुरुदेव का उक्त कथन, पूर्व संकेत के रूप में सब के समझ में आया।

सायं चाय-पान के बाद समाचार-पत्रों के आवश्यक शीर्षक पढ़े। तत्पश्चात कमरे में कुर्सी पर बैठे ध्यान किया। रात्रि ९ बजे के बाद भोजन के लिए आये। भोजनोपरांत अधिकतर वे श्रीप्रकाश से नित्य दिन भर के समाचार पूछते और विपश्यना या केंद्रों संबंधी बातों पर भी चर्चा किया करते थे। परंतु आज कोई बात नहीं की और सीधे कमरे में चले गये।

कमरे में कुछ देर बैठे रहे। फिर बिस्तर पर लिटाने के लिए कहा। लेटने के कुछ देर बाद ही शरीर छोड़ने की क्रिया आरंभ हो गयी। थोड़ी देर के लिए सांस की गति तेज़ हो गयी। तब पूज्यनीय माताजी ने पुत्र श्रीप्रकाश और पुत्रवधू नयना को बुलाया। उन्होंने आते ही डॉक्टरों को बुलवाया। इसी बिल्डिग के डॉक्टर ने आते ही एंबुलेन्स बुलवाने का आदेश दिया और अस्पताल में आवश्यक तैयारी करने का भी। परंतु पारिवारिक डॉक्टर के आने तक स्थिति नाजुक हो चुकी थी। उसने संकेत दिया कि अब एंबुलेन्स का कोई लाभ नहीं मिलेगा। जब तक एंबुलेन्स यहां पहुँचेगी, हम इन्हें उसमें रख नहीं पायेंगे। और सचमुच थोड़ी देर में ही उन्होंने जांच करके बता दिया कि इनकी हृदयगति बंद हो गयी है। परंतु पू. गुरुदेव के चेहरे पर पीड़ा का कोई भाव या चिह्न नहीं था। जिस प्रकार जीवन भर उन्होंने विपश्यना विद्या द्वारा लोगों को जीवन जीने और मरने की कला सीखने का उपदेश दिया, बिल्कुल उसी के अनुरूप एक आदर्श गृही संत की भांति सदा के लिए शरीर त्याग दिया।

उस समय वातावरण में गहन शांति छा गई थी। किसी को विश्वास ही नहीं हो रहा था कि अब वे सदा के लिए संसार छोड़ कर चले गये हैं। किसी के मुँह से रुदन या दुःख का एक शब्द भी नहीं फूटा। इसके पहले जब कभी उन्हें अधिक कठिनाई होती तब पूज्यनीय माताजी अक्सर अश्रुमुख हो जाया करती थीं। परंतु आज माताजी की मनःस्थिति अत्यंत शांत, समतामय और प्रेरणादायक थी। उन्हें देख कर सचमुच यही लगा कि धर्म कितना महान है और ऐन वक्त पर कैसे काम करता है।

फिर तो एक-दो व्यक्तियों को बताते ही पूरे मुंबई शहर क्या, विश्वभर में यह समाचार दावानल की भांति सर्वत्र फैल गया। रात में ही लोगों के फोन तथा आने-जाने का तांता लग गया। परिवार के कई सदस्य विदेश में थे। उन्हें पहुँचने में २४ घंटे से अधिक समय लगना स्वाभाविक था। अतः निर्णय किया गया कि ३० सितंबर को उनका शरीर कांच की स्वयं-शीतल पेटी में घर पर ही रखा जायगा और १ अक्टूबर को दोपहर तक अंत्येष्टि क्रिया संपन्न होगी। हजारों लोगों की भीड़ दिन भर आती रही और श्रद्धांजलि दे कर लोग आगे बढ़ते रहे।

३० सितंबर को घर के अंदर श्रद्धांजलि

रात के १० बजे भी चार-पांच सौ लोग इमारत के बाहर सड़क पर कतारबद्ध खड़े थे। जो अंदर आ गये थे उनमें से दूर से आये हुए कुछ लोग नीचे बने पंडाल में रात भर रुके रहे। शेष को सुबह आने के लिए निवेदन करना पड़ा। १ अक्टूबर की सुबह ६ बजे से ही फिर लोगों का आना-जाना आरंभ हो गया। १०.१५ बजे तक दर्शनार्थियों की लंबी कतार लगी रही। सवा दस बजे उनका पार्थिव शरीर नीचे बनाये गये पंडाल में ले जाया गया और वहां भी ११.३० बजे तक लोग कतारबद्ध होकर आदरांजलि देते रहे।

पंडाल से बाहर ले जाते हुए पुलिस-दस्ता

राजकीय सम्मान देता हुआ पुलिस-दस्ता

महाराष्ट्र सरकार ने राजकीय सम्मान के साथ पू. गुरुदेव को विदाई देने का निर्णय घोषित किया था। तदनुसार सरकार ने विशेष पहनावे के साथ शस्त्र-सज्जित एक पुलिस-दस्ता भिजवाया जिसने पू. गुरुदेव के पार्थिव शरीर को राष्ट्रीय ध्वज में ढक कर बैंड-बाजे, बिगुल और तलवार तथा बंदूकों की सलामी देकर सम्मान प्रदर्शित किया। यह पुलिस-दस्ता अंत्येष्टि-गृह तक पू. गुरुदेव की शोभायात्रा के साथ गया, और अंत्येष्टि-क्रिया के अंत में पुनः बंदूकों की सलामी दी। सरकार ने बड़ी संख्या में पुलिस की व्यवस्था करवायी थी। कुछ स्वयं-सेवी संस्थाओं ने मिल कर ५-६ किलोमीटर दूर अंत्येष्टि-गृह तक जाने के रास्ते को सुगम बनाया। कुछ भिक्षु वाहन के आगे चल रहे थे, जबकि हजारों लोगों की भीड़ कतारबद्ध, शांतभाव से ओशिवारा, जोगेश्वरी (पश्चिम) के विद्युत-अंत्येष्टि-गृह तक अंतिम विदाई देने के लिए उनके पीछे चलती रही। पुलिस-दस्ते ने राष्ट्रीय सम्मान देने के लिए लाया गया राष्ट्रीय ध्वज पूज्य गुरुदेव की याद को चिरकाल तक जीवित रखने के लिए परिवार वालों को सौंप दिया।

मुंबई की शोभा-यात्रा, भिक्षुओं के पीछे अन्य लोग

१ अक्टूबर की सायं उनका अस्थि-कलश जब 'ग्लोबल विपश्यना पगोडा'' पहुँचा। उस समय पगोडा के मुख्य द्वार के पास गाड़ी के रुकते ही वर्षा की झड़ी लग गयी, मानो पर्जन्यदेव तथा अन्य सम्यक देव उनका स्वागत करने के लिए पहले से ही तत्पर हों।

२ अक्टूबर की सायं ४ से ७ बजे तक सगे-संबंधियों और परिचित लोगों की बैठक जलाराम हॉल, जुहू स्कीम में बुलायी गयी थी। वहां भी सैकड़ों लोगों ने पू. गुरुदेव को अंतिम श्रद्धांजलि अर्पित की। २ अक्टूबर के समाचार पत्रों में यह सूचना प्रकाशित करवा दी गयी थी कि ६ अक्टूबर को गोराई के पगोडा के मुख्य साधना-कक्ष में सामूहिक साधना रखी गयी है। इसमें सम्मिलित होने के लिए लोग दूर-दूर से भी आये। साधना-कक्ष के मध्य भाग में सदा की भांति पूज्य माताजी बैठीं और निकट ही पूज्य गुरुदेव के फोटो के सामने अस्थि-कलश रखा गया। लगभग पांच हजार साधकों के अतिरिक्त अन्य हजारों श्रद्धालुओं ने भी अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की। तत्पश्चात अस्थि-कलश बरमा ले जाया गया।

पू. गुरुदेव की इच्छा थी कि उनके अस्थि-अवशेष को उनकी जन्मभूमि बरमा ले जाकर इरावदी नदी में विसर्जित किया जाय। अतः ६ अक्टूबर की रात को पू. गुरुदेव के पांच पुत्र श्री बनवारीलाल, श्री मुरारीलाल, श्री श्यामबिहारी, श्री श्रीप्रकाश, श्री जयप्रकाश एवं उनके तीन पौत्र तथा कुछ अन्य सदस्यों ने अस्थि-कलश लेकर बरमा के लिए प्रस्थान किया। सबसे बड़े पुत्र श्री गिरधारीलालजी अस्वस्थ होने के कारण बरमा नहीं जा सके, परंतु यहां मुंबई के सभी कार्यक्रमों में नियमित रूप से उपस्थित थे। ७ अक्टूबर को लगभग १.३० बजे विमान मुंबई से बैंकाक के लिए रवाना हुआ। बैंकाक हवाई अड्डे पर ढाई घंटे के बाद यांगों {(रंगून) (बरमा या आधुनिक नाम म्यंमा)} के लिए विमान बदलना था।

थाईलैंड में विपश्यना के नौ केंद्र होने के कारण श्रद्धालुओं की संख्या बहुत अधिक है। उन सब ने मिल कर हवाई अड्डे के अधिकारियों और सरकार के सहयोग से लाउंज में ही दो कमरे बुक करवा कर, श्रद्धांजलि अर्पण करने का कार्यक्रम बनाया। अधिकारियों के सहयोग से लगभग २० व्यक्तियों ने विमान के द्वार तक जाकर अस्थि-कलश लेकर उतरने वालों का भव्य स्वागत किया। ये लोग वीसा लेना चाहते थे, परंतु अधिकारियों ने पासपोर्ट अपने पास रख कर इन्हें बाहर लाउंज में जाने की स्वीकृति दे दी। वहां पहले से ही पू. गुरुदेव की फोटो और सफेद कमल के फूलों से सजाये गये मंच पर अस्थि-कलश रखा गया। सारी रात वर्षा होती रहने के बावजूद, सैकड़ों की संख्या में साधक एकत्र हुए थे। उन्होंने एक घंटे तक छोटे-छोटे समूहों में, बारी-बारी से श्री गोयन्काजी को अंतिम श्रद्धांजलि अर्पित करके स्वयं को धन्य माना। एक विशेष बात यह हुई कि रात भर चलती रहने वाली भारी वर्षा, इस विमान के धरती पर उतरते ही बंद हुई और लोगों ने राहत की सांस ली।

थाईलैंड हवाई-अड्डे पर श्रद्धांजलि

७ अक्टूबर की सुबह यांगों हवाई अड्डे पर भी अस्थि-कलश का भव्य स्वागत किया गया। अस्थि-कलश को एक सुसज्जित वाहन पर रख कर विपश्यना के प्रथम केंद्र धम्म-जोति ले जाया गया। बरमा में विपश्यना के बीस केंद्र और बड़ी संख्या में श्रद्धालु हैं। सभी लोग बड़ी आतुरता से अस्थि-कलश की प्रतीक्षा कर रहे थे। वहां हॉल में पहले से ही सुसज्जित एक मंच पर अस्थि-कलश रखा गया और कतारबद्ध होकर साधक श्रद्धांजलि अर्पित करते रहे।

७ अक्टूबर को २.२७ बजे म्यंमा में भूकंप (रेक्टर ३.१) का कंपन महसूस किया गया। इसे पू. गुरुदेव श्री गोयन्काजी की जन्मभूमि म्यंमा (बरमा) में प्रकृति द्वारा उनके आखिरी स्वागत का संकेत माना गया। पूज्य गुरुदेव जब जून १९६९ में बर्मा से भारत आये थे तब भारत में भी हलका भूकंप महसूस किया गया था।

धम्म-जोति यांगो के केंद्र पर 'अस्थि-कलश'

इरावदी नदी (रंगून) में अस्थि-विसर्जन

८ अक्टूबर को सुबह ९ बजे बरमा के गोयन्का-निवास में ९० भिक्षुओं को संघदान दिया गया। तत्पश्चात दोपहर ११ बजे अस्थि-कलश को धम्म-जोति से लेकर सब लोग बोटठाऊं जेट्टी पर गये। वहां विशेष नौका (मोटर-बोट) द्वारा यांगो नदी (इरावदी) के मध्य में जाकर पूज्य गुरुदेव के पुत्रों और पौत्रों ने अस्थियों के कुछ भाग का विसर्जन किया। संयोगवश उसी समय बरमी सरकार ने ५६ कैदियों को भी जेल से रिहा कर दिया। अस्थि-कलश वापस लाकर धम्म-जोति पर रखा गया।

उसी दिन सायं ३ से ५ बजे तक होटल रॉयल पार्क के बॉलरूम में एक बैठक रखी गयी, जिसमें बरमा में रहने वाले सगे-संबंधी, परिचित-मित्र तथा अन्य श्रद्धालुजन आकर अपनी श्रद्धांजलि अर्पित किये।

९ अक्टूबर की सुबह धम्म जोति से अस्थि-कलश लेकर विमान द्वारा यांगो से मचीना के लिए रवाना हुए। वहां उतर कर मचीना की इरावदी (जहां से नदी आरंभ होती है) में अस्थियों का कुछ भाग विसर्जित किया गया। इन सब को अस्थि-कलश लेकर उसी दिन मांडले वापस लौटना था। इसलिए उस विमान को इनके लौटने तक लगभग ढाई घंटे रुकना पड़ा, जबकि रूटीन के अनुसार उसे आधे घंटे में ही वापस लौटना चाहिए था।

मचीना में रथ-यात्रा

मचीना की इरावदी नदी में अस्थि-विसर्जन हेतु...

इस विमान से ये लोग मांडले लौटे और कलश को विपश्यना केंद्र-- धम्म मण्डल में रखा गया ताकि श्रद्धालु लोग अपनी श्रद्धांजलि अर्पित कर सकें। सायं बरमा के प्रसिद्ध भिक्षु भदंत ञाणीसारजी (सितगू सयाडो) ने अगले दिन का पूरा कार्यक्रम निश्चित करके सबको समझाया। मांडले राज्य के मुख्यमंत्री और बरमी सरकार के धार्मिक एवं सांस्कृतिक मंत्रालय के मंत्री तथा मांडले के पुलिस कमिश्नर शाम को ही वहां पहुँच कर सारे कार्यक्रम का अवलोकन करके समर्थन किया। उन्होंने अपने अधिकारियों को आदरणीय भंतेजी की इच्छानुसार काम करने का निर्देश दिया।

मांडले में रथ-यात्रा

ग्लोबल पगोडा, गोराई, मुंबई के साधना-कक्ष में सामूहिक साधना

मांडले की इरावदी नदी में नौकाओं का दृश्य

१० अक्टूबर को प्रातः ९ बजे आदरणीय भिक्षुओं के लिए संघदान का आयोजन था। भोजन परोसने के पहले सुत्त-पाठ के उपरांत भदंत ञाणीसारजी ने पूज्य गुरुदेव के बारे में बरमी भाषा में विस्तृत प्रवचन दिया। (इसका अनुवाद हो जाने पर भविष्य में प्रकाशित करेंगे।) उसके बाद बड़ी संख्या में एकत्र हुए सभी आगंतुकों को भोजन दिया गया। तत्पश्चात यात्रा आरंभ होने के पहले भदंत ञाणीसारजी ने सभी भिक्षुओं को निर्देश दिया कि वे निम्न पालिपद का पाठ

यात्रा के आरंभ से अंत तक लगातार करते रहें, जिसका अर्थ भी नीचे लिखा है –

अनिच्चा वत सङ्खारा, उप्पादवयधम्मिनो।
उप्पज्जित्वा निरुज्झन्ति, तेसंवूपसमोसुखो॥

– दीघनिकाय २.२२१, महापरिनिब्बानसुत्तं

-- सचमुच! सारे संस्कार अनित्य ही तो हैं। उत्पन्न होने वाली सभी स्थितियां, वस्तु, व्यक्ति अनित्य ही तो हैं। उत्पन्न होना और नष्ट हो जाना, यह तो इनका धर्म ही है, स्वभाव ही है। विपश्यना साधना के अभ्यास द्वारा उत्पन्न हो कर निरुद्ध होने वाले इस प्रपंच का जब पूर्णतया उपशमन हो जाता है – पुनः उत्पन्न होने का क्रम समाप्त हो जाता है, उसी का नाम परम सुख है, वही निर्वाण-सुख है।

इस प्रकार दोपहर बाद शाही साजोसामान और सम्मान के साथ शोभा-यात्रा प्रारंभ हुई। सुनहरे रंग के हंस की आकृति में बने विशेष वाहन पर अस्थि-कलश रखा गया। उसके पीछे गोयन्का परिवार की गाड़ियां चलीं। उसके पीछे भिक्षु-भिक्षुणियां और विपश्यना के आचार्यगण। उसके पीछे मीडिया और अंत में जनसामान्य की गाड़िया थीं। कार्यक्रम निश्चित करते समय केवल ६९ गाड़ियां उपस्थित थीं परंतु यात्रा आरंभ होने तक लगभग ३०० गाड़ियां हो गयीं।

लगभग डेढ़-दो घंटे की यह यात्रा इरावदी के पमादी जेट्टी तट पर पहुँची। तट पर पांच विशेष सजी हुई बड़ी नौकाओं (मोटर-बोट) की व्यवस्था की गयी थी। एक पर अस्थि-कलश के साथ परिवार के लोग और विपश्यना के आचार्यगण सवार हुए, दूसरी पर केवल भिक्षु, तीसरी पर केवल भिक्षुणियां, चौथी पर मीडिया के लोग और पांचवी पर अन्य साधक-साधिकाएं सवार होकर नदी के मध्य भाग में अस्थि-विसर्जन के लिए गये। विसर्जन के समय तक अँधेरा होने लगा था। उस दिन दोपहर १२ बजे से सायं ७ बजे तक सरकार ने अन्य सभी नौकाओं-जहाजों को उस क्षेत्र में आने से रोक दिया था।

सभी नौकाओं ने चारों ओर से घूम कर गोलाकार आकृति बनायीं और सब ने एक साथ एक हजार तैरने वाले मोमबत्ती के दीपक जला कर नदी में प्रवाहित किये। यह भव्य नजारा शाम के अँधेरे में और भव्य हो गया जबकि रंगीन कवर लगे हुए ये दीप नदी की धारा में हिलते हुए फैल गये, मानो देवलोक के देवगण प्रसन्न होकर झूम उठे हों। अनेक प्रकार की आतिशबाजी की गयी जो कि जल-तल से आसमान तक अद्‌भुत दृश्य उपस्थित कर रही थी।

इसके अंत में भदंत ञाणीसारजी ने कहा कि ऐसा भव्य स्वागत आज तक कभी किसी का नहीं हुआ था और न ही ऐसी विदाई किसी अन्य की होने की संभावना है। भदंत ञाणीसारजी ने यह भी कहा कि १९६९ में ऊ गोयन्का के माध्यम से इरावदी के तट से जो धर्मगंगा भारत गयी थी वह अस्थि-कलश के रूप में २०१३ में वापस आकर इसी में विलीन हो गयी। फिर भी धर्मप्रसारण का कार्य विश्व भर में चलता रहेगा। रात में ये सब लोग मांडले में ही रहे।

११ अक्टूबर को सुबह गोयन्का परिवार के लोग विमान द्वारा मांडले से रंगून वापस लौटे और उसी दिन सायंकालीन विमान से बैंकाक होते हुए रात के लगभग २ बजे मुंबई अपने घर पहुँचे। १२ अक्टूबर की सुबह भिक्षुओं को आमंत्रित करके संघदान दिया गया। इस अवसर पर परिवार के सभी सदस्य एवं सगे-संबंधी उपस्थित थे। सभी संघदान में सम्मिलित होकर बहुत प्रसन्न हुए। संघदान का आयोजन १३ को भी रखा गया। इस प्रकार विपश्यना द्वारा विश्व को शुद्ध धर्म की अनुभूति कराने वाले एक गृही संत को भावभीनी श्रद्धांजलि के साथ अंतिम विदाई दी गयी।

पूज्य गुरुदेव अपनी भौतिक काया से भले ही हमसे दूर हो गये हों, परंतु उनकी धर्मभूत काया, उनकी वाणी, उनकी दिव्य धरोहर सदैव हमारे साथ रहेगी। अब यह हमारा कर्तव्य है कि इस अनमोल विद्या को अपने जीवन का अंग बनायें और अधिक से अधिक लोगों को धर्मलाभ ले सकने में सहायक बनें। धर्म धारण करेंगे तो आपसी सौहार्द बना रहेगा और अपने साथ-साथ अन्य अनेकों के मंगल-कल्याण में भी सहायक बनेंगे। सब लोग मिल कर पूरे विश्व में पूज्य गुरुदेव के धर्म-प्रसारण के लक्ष्य को पूरा करें, तभी सही माने में उनके प्रति हमारी सच्ची श्रद्धांजलि होगी। तभी हम सब का सच्चा मंगल सधेगा और सही माने में धर्म हमारा कल्याण करेगा।

भवतु सब्ब मंगलं!

कृतज्ञता ज्ञापन

विपश्यनाचार्य श्री सत्यनारायणजी गोयन्का के देहावसान पर आपका संवेदना संदेश प्राप्त हुआ। सब को अलग-अलग पत्र लिख पाना संभव नहीं होने के कारण इस पत्रिका के माध्यम से आप सब का आभार व्यक्त करते हैं। अपने अंतर्मन को निर्मल करके शुद्ध धर्म को धारण करने की उन्होंने जो अनमोल 'विपश्यना' विद्या सिखायी है उसके नियमित, निरंतर अभ्यास में ही सब का मंगल कल्याण समाया हुआ है और यही करणीय है।

एक बार पुनः धन्यवाद देते हुए, मंगल कामनाओं सहित,

-- इलायचीदेवी गोयन्का
एवं समस्त गोयन्का परिवार

अलविदा गुरुदेवजी

परम पूज्य गुरुदेव का देह-त्याग जो रिक्तता छोड़ गया, उसे भरना असंभव है। परंतु इसके लिए पिछले कई महीनों से वे अपने आवश्यक कार्यों को व्यवस्थित करने में जुटे हुए थे। ताकि उनकी अनुपस्थिति में उनके द्वारा स्थापित धर्मकार्य सुचारुरूप से सुव्यवस्थित चलता रहे। इसके लिए उन्होंने कई ऐतिहासिक निर्णय लिए और अपने समीपस्थ सेवकों को आवश्यक मार्गदर्शन भी दिया।

विपश्यना के प्रशिक्षण-संबंधी और विपश्यना केंद्रों के संचालन संबंधी बड़े ही स्पष्ट निर्देश दिये, जो पिछले दिसंबर, २०१२ की पत्रिका और Newsletter में प्रकाशित हुए। इसके बाद भी अनेक स्पष्टताएं और निर्देश देते रहे।

पिछले कुछ महीनों में ऐसी सूची तैयार करवायी जिसमें विपश्यना संबंधी संशोधन के अनेक विषय अंकित हैं। विपश्यना विशोधन विन्यास को इन पर शोध एवं संशोधन करने में वर्षों लग जायेंगे। पालि भाषा और साहित्य को सदियों तक सुरक्षित रखने और विपश्यना साधना की प्रशिक्षण-सामग्री सुरक्षित रखने की सारी व्यवस्था अपनी उपस्थिति और निगरानी में पहले ही तैयार करवाई थी।

अपने गुरुदेव सयाजी ऊ बा खिन के प्रति प्रतिबद्धता और समर्पण, म्यंमा के प्रति सम्मान और कृतज्ञता, भगवान बुद्ध के प्रति अनन्य भक्ति और सम्मान प्रकट करने, तथा भगवान बुद्ध की सही शिक्षा से लोगों को अवगत कराने के लिए ही उन्होंने अपनी सूझ-बूझ का परिचय देते हुए एक भव्य पगोडा का निर्माण करवाया। इसका भविष्य सुनिश्चित करने के लिए उन्होंने एक **'कार्पस-फंड'** की योजना का सुझाव दिया ताकि चिरकाल तक यह पगोडा लोगों को सद्धर्म की ओर आकर्षित करता रहे। लोग यहां आकर प्रेरणा लेते रहें। उनको विश्वास था कि इस **'कार्पस-फंड' योजना** में गरीब-अमीर सभी प्रकार के उनके साधक-साधिकाएं भाग लेंगे और पगोडा को दीर्घकाल तक सुरक्षित रखने में सहयोग करेंगे। इस प्रकार यह सदियों तक लोगों का मार्गदर्शन करता रहेगा।

गुरुदेव ने केवल एक सप्ताह पहले 'विपश्यना विशोधन विन्यास' और 'ग्लोबल विपश्यना पगोडा' के विस्तार की योजनाओं पर भी महत्त्वपूर्ण प्रकाश डाला।

जब यह सब हो रहा था तब किसी के भी मन में यह भाव नहीं आया कि यह सब उनकी बिदायी की तैयारी है। पिछले पच्चीस वर्षों से मैंने उन्हें धर्मकार्य में बहुत ही उत्साहित देखा था। मन में अब भी वही निश्चिंतता थी कि अभी आगामी दस वर्षों तक तो वे हमें मार्गदर्शन देते ही रहेंगे।

परंतु पिछले कुछ महीनों की घटनाओं के बारे में सोचने पर यही प्रतीत होता है वर्षों पूर्व के मार्गदर्शन और आज के मार्गदर्शन में अंतर था। वे अपने सहायकों को और अधिक जिम्मेदार बना कर, भविष्य की बड़ी महत्त्वपूर्ण रूपरेखा सुनिश्चित कर रहे थे।

आध्यात्मिक जगत के एक महानतम व्यक्तित्व ने प्रत्यक्षरूप से भले बिदायी ले ली हो, परंतु उनके दिखाये पथ और निर्देशों का अनुसरण करते हुए हम उन्हें सदैव अपने समीप ही पायेंगे।

प्रमुख आचार्य के रूप में पूज्य माताजी अब भी हमारे साथ हैं जो कि लगभग ७० वर्षों तक छाया की भांति गुरुदेव के साथ रही हैं, उनके हर कार्य में सहयोग दिया है और उनके निकटतम सान्निध्य की सहभागी रही हैं। उनसे नम्र अनुरोध है कि भले ही आज हमारे सिर पर से एक विशद छत्र चला गया हो, परंतु माताजी की छत्रछाया और मार्गदर्शन हमारे साथ रहे।

जिस प्रकार की श्रद्धांजलि अपने गुरुदेव सयाजी ऊ बा खिन को पूज्य गुरुजी ने दी थी यानी अपना सारा जीवन धर्म-प्रसारण के कार्य में लगा दिया था, वैसे ही हम भी अपना सर्वस्व निछावर करके धर्मपथ पर चलने, उसकी शुद्धता को कायम रखने और भविष्य की पीढ़ियों को उसी शुद्धता के साथ सौंपने के लिए प्रतिबद्ध हों, तभी उनके प्रति हमारी सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

(एक श्रद्धालु साधिका)

Registered No. NSK/235/2012-2014

WPP Postal License No. AR/Techno/WPP-05/2012-2014

सयाजी ऊ बा रिवन की पुण्यतिथि के अवसर पर पूज्य माताजी के सान्निध्य में एक दिवसीय महाशिविर

19 जनवरी, 2014, **रविवार**, **समयः** प्रातः **11** बजे से अपराह्न **4** बजे तक, **'ग्लोबल विपश्यना पगोडा'** में। **3 बजे पूज्य गुरुजी के प्रवचन में बिना साधना किये लोग भी बैठ सकते हैं। शिविर के लिए बड़ी संख्या में धर्मसेवकों की भी आवश्यकता है।** कृपया निम्न फोन नंबरों या ईमेल से शीघ्र संपर्क करें। कृपया **बिना बुकिंग कराये न आएं।** बुकिंग संपर्क: फोन नं.: 022-28451170 / 022-33747501- Extn. 9, 022-33747543 / 33747544, **(फोन बुकिंग :** प्रातः **11** से सायं **5** तक, प्रतिदिन) **ईमेल Regn: oneday@globalpagoda.org**
Online Registration: www.oneday.globalpagoda.org

नव नियुक्तिया

सहायक आचार्य

१. डॉ. आदिल इरानी, अमेरिका
२. श्रीमती उज्वला खंते, अमेरिका
३. श्री उमेश गिरि, अमेरिका
4. Ms. Paola O'Sullivan, UK

बालशिविर शिक्षक

१. श्री हेमचंद सावला, कच्छ
२. कु. रेचल हॉमरलिन, कच्छ(USA)
३. श्रीमती बढीबेन बेरा, कच्छ
४. श्री वासुदेव जडेजा, कच्छ
५. कु. मंजुला संपत, कच्छ
६. कु. समता सोलंकी, कच्छ
७. श्री जनकराय भट्ट, कच्छ
८-९. श्री कल्पेश एवं श्रीमती तृप्ति गोस्वामी, कच्छ
१०. श्री धर्मेंद्र सोमकुँवर, भोपाल
११. श्रीमती चंद्रकांता जांभुलकर, भुसावल
१२. श्रीमती विद्या उमाले, भुसावल
13. Mrs. Mary Knox, Australia
14. Ms.Maria Cheung Sze Yuen, Hong Kong
15. Ms. Erlina Zheng, Indonesia

विपश्यना विशोधन विन्यास, ग्लोबल पगोडा में पालि पाट्यक्रम - २०१४

ग्लोबल पगोडा में आवासीय पाट्यक्रम– पालि व्याकरण, सुत्त, सैद्धान्तिक विपश्यना इत्यादि। आवासीय पाट्यक्रम (परियत्ति और पटिपत्ति):–

३० दिवसीय प्रारंभिक पालि-हिंदीः अवधि - २०-०१-२०१४ से २०-०२-१४ तक; फार्म जमा करने की अंतिम तिथि - १० जनवरी १४;

९० दिवसीय पाट्यक्रमः पालि-अंग्रेजी; अवधि - ०१-०६-२०१४ से ३०-८-१४ तक; केवल पुरुषों के लिए, आवेदन पत्र जमा करने की अंतिम तिथि - ३० एप्रैल २०१४;

६० दिवसीय पाट्यक्रमः पालि-अंग्रेजी; अवधि - १०-१०-२०१४ से १०-१२-२०१४ तक; आवेदन पत्र जमा करने की अंतिम तिथि - १ सितंबर २०१४; **सबके लिए कंप्यूटर पर आवेदन पत्र –** www.vridhamma.org से भी भेज सकते हैं.

प्रवेश योग्यताएं:- वे साधक जिन्होंने — १. कम से कम **तीन १०-दिवसीय** शिविर तथा **एक सतिपट्ठान**- शिविर किये हों।
२. एक वर्ष से नियमितरूप से दो घंटे की दैनिक साधना करते हों।
३. एक वर्ष से पंचशील का कड़ाई से पालन कर रहे हों।
४. कम से कम १२वीं कक्षा पास होने का प्रमाण-पत्र साथ हो।

संपर्कः विपश्यना विशोधन विन्यास (**V.R.I.**), ग्लोबल विपश्यना पगोडा, एस्सेल वर्ड के पास, बोरीवली (पश्चिम), मुंबई - ४०००९१.

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें– डॉ शारदा संघवी – फोनः (२३०९५४१३) ९२२३४६२८०५, **ईमेलः mumbai@vridhamma.org, director@vridhamma.org;** २) श्रीमती बलजीत लाम्बा: फोनः ०९८३३५१८९७९; ३) अलका वेंगुर्लेकर: मो– ०९८२०५८३४४०.

दोहे धर्म के

गुरुवर! तेरा आसरा, तेरा ही आधार।
तेरी छत्तर छांह में, होएं भव के पार॥
बोधिसत्व गुरुदेव ने, पकड़ी मेरी बांह।
मुक्ति विधायक पथ दिया, बोधिवृक्ष की छांह॥
गुरुवर तेरे पुण्य का, कैसा प्रबल प्रताप।
जागा बोध अनित्य का, दूर हुए भव-ताप॥
धर्म दिया गुरुदेव ने, कैसा रतन अमोल।
मृत्युलोक के जीव को, अमृत का रस घोल॥
सद्गुरु की संगत मिली, मिला धर्म का सार।
जीवन सफल बना लिया, सिर का भार उतार॥

केमिटो टेक्नोलॉजीज (प्रा०) लिमिटेड

८, मोहता भवन, ई-मोजेस रोड, वरली, मुंबई- 400 018
फोन: 2493 8893, फैक्स: 2493 6166
Email: arun@chemito.net
की मंगल कामनाओं सहित

दूहा धरम रा

गुरुवर स्यूं साबण मिली, अंतर रा पट धोण।
मिली ज्योत सद्धरम री, हिवड़ो जगमग होण॥
गुरुवर तैरै पुन्य रो, कैसो प्रबळ प्रताप।
जागै बोध अनित्य रो, दूर करण भवताप॥
गुरुवर रै उपदेस स्यूं, मूरख ग्यानी होय।
लोहो तो सुवरण हुवै, पत्थर पारस होय॥
सुख स्यूं जीवन जीण री, विद्या दयी सिखाय।
गुरुवर तेरी ही क्रिपा, दुखड़ा दिया मिटाय॥
अनित्य बोधिनी गंग मँह, डुबकी लगती जाय।
उतरै मन री कालिमा, सुद्धी होती जाय॥

मोरया ट्रेडिंग कंपनी

सर्वो स्टॉकिस्ट - इंडियन ऑईल, ७४, सुरेशदादा जैन शॉपिंग कॉम्प्लेक्स, एन.एच.६, अजिंठा चौक, जलगांव - ४२५ ००३, फोन. नं. ०२५७-२२१०३७२, २२१२८७७
मोबा.०९४२३१८७३०१, Email: morolium_jal@yahoo.co.in

'विपश्यना विशोधन विन्यास' के लिए प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक: राम प्रताप यादव, धम्मगिरि, इगतपुरी-422 403, दूरभाष : (02553) 244086, 244076.
मुद्रण स्थान : अक्षर चित्र प्रिंटिंग प्रेस, 69- बी रोड, सातपुर, नाशिक-422 007. **बुद्धवर्ष 2557, आश्विन पूर्णिमा, 18 अक्तूबर, 2013**

वार्षिक शुल्क रु. **30/-,** US $ 10, **आजीवन शुल्क** रु. **500/-,** US $ 100. **'विपश्यना' रजि. नं. 19156/71. Registered No. NSK/235/2012-2014**

WPP Postal Licence No. AR/Techno/WPP-05/2012-2014
Posting day- **Purnima of Every Month,** Posted at **Igatpuri-422 403,** Dist. Nashik (M.S.)

If not delivered please return to:-

विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी - 422 403
जिला-नाशिक, महाराष्ट्र, भारत
फोन : (02553) 244076, 244086, 243712,
243238. **फैक्स :** (02553) 244176
Email: info@giri.dhamma.org
Website: www.vridhamma.org